12

भारत में पर्यटन के प्राकृतिक आकर्षण

भारत भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता से भरपूर एक विशाल देश है। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्री तट तक तथा पश्चिम में थार के रेगिस्तान से लेकर पूर्वोत्तर के नम जंगलों तक इसकी विविधता फैली हुई है। यहाँ तक कि दक्षिण में भूमध्यरेखीय जलवायु से लेकर उत्तर में उच्च ढ़लानों पर ध्रुवीय जलवायु तक की विविधता भी देखी जाती है। यह समृद्ध विविधता इन स्थानों को देखने वाले पर्यटकों के लिए अनेक स्वाभाविक आकर्षण का कार्य करती हैं। मैदानी और दक्षिण भारत के लोग गर्मियों में ठण्डे मौसम की तलाश में हिमालय के पर्वतीय स्थलों पर जाना चाहेंगे। इसी प्रकार उत्तर भारत के लोग तटीय क्षेत्रों को देखना चाहेंगे। यह विविधता देश में पर्यटन को बढ़ावा देने में बड़ी भूमिका निभाती है। प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र की अपनी सुन्दरता है। आज जीवन बहुत व्यस्त और मशीनी हो गया है। लोग अब अपने आप को तरोताजा करने के लिए प्रकृति की ओर लौटना चाहते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य की मांग अब न केवल घरेलू पर्यटकों में अपितु अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों में भी है। इस पाठ में हम भारत की भौगोलिक विशेषताओं के बारे में पढ़ेंगे तथा देखेंगे कि इसके पास पर्यटकों को देखने, सराहने और आन्नद लेने के लिए क्या-क्या हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- भारत की भौतिक विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत में पर्यटन स्थलों के वितरण की चर्चा कर सकेंगे;
- वन्य जीवों के कारण लोकप्रिय पर्यटन स्थलों के प्राकृतिक आकर्षण की पहचान कर सकेंगे;
- भारत में विभिन्न पक्षी विहारों का वर्णन कर सकेंगे; और
- भारत में विभिन्न पर्वतीय स्थलों को दर्शा सकेंगे।

12.1 भारत का भौतिक स्वरूप

भारत की भौतिक विशेषताओं का सम्बन्ध देश के भौतिक स्वरूप जैसे ऊंचाई, भौगर्भिक इतिहास, उत्पत्ति और भौगोलिक लक्षणों से है। इन मापदंडों के आधार पर भारत को चार प्रमुख भागों में बांट सकते हैं (चित्र 12.1)।

1. उत्तरी पर्वतीय क्षेत्र
2. विशाल उत्तरी मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठार
4. तटीय मैदान और द्वीप समूह

12.1.1 उत्तरी पर्वतमाला

देश की उत्तरी सीमा हिमालय की पर्वत श्रेणियों से बनी हुई है। यह उत्तर-पश्चिम में जम्मू-कश्मीर से लेकर पूर्व में पूर्वांचल की पर्वतीय श्रेणियों तक फैली हुई है। हिमालय (हिम + आलय) का शाब्दिक अर्थ है हिम का घर। यह विश्व की सबसे नई पर्वतमालाओं में से एक है। यह समुद्र तल से 8000 मीटर से भी अधिक ऊंची है। विश्व की सबसे ऊंची पर्वतमाला होने के कारण इसमें विश्व का सबसे ऊंचा शिखर भी है।

हिमालय को पश्चिम से पूर्व (दिशा) तीन समानान्तर श्रेणियों में बांटा जा सकता है।

(अ) महान हिमालय अथवा हिमाद्रि

(ब) निम्न हिमालय अथवा हिमाचल

(स) बाहरी हिमालय अथवा शिवालिक

महान हिमालय अथवा हिमाद्री: यह सबसे उत्तरी भाग में स्थित शृंखला है जिसकी समुद्र तल से औसत ऊंचाई 6000 मीटर है। इसकी चौड़ाई 90 से 120 किलोमीटर तक है। विश्व की सबसे ऊंची चोटी माऊन्ट एवरेस्ट इसी शृंखला में स्थित है। यह नेपाल में है जिसकी ऊंचाई 8848 मीटर है। भारतीय क्षेत्र की ऊंची चोटियों में कंचनजंगा (8598 मीटर), मकालू (8481 मीटर), धौलागिरी (8172 मीटर), मनसुलु (8156 मीटर), नन्दा देवी (7817 मीटर) इत्यादि हैं। बहुत से ऊंचे पर्वत दर्रे जैसे बारा लच्छा ला, शिपकिला, थंगला ला, नाथूला और जोजिला इत्यादि हिमालय की इसी शृंखला में स्थित हैं। यह क्षेत्र साहसिक पर्यटन गतिविधियों, जैसे पर्वतारोहण, ट्रैकिंग और क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य को निहारने के लिए काफी लोकप्रिय है।

निम्न हिमालय अथवा हिमाचल: यह शृंखला हिमाद्रि के दक्षिण में लगभग समानान्तर स्थित है। इसकी ऊंचाई 1800 से 3000 मीटर के बीच है और इसकी चौड़ाई 60 से 80 किलोमीटर तक है। इस वर्ग/क्षेत्र में धौलाधर, पीरपंजाल, महाभारत श्रेणी और मसूरी शृंखला शामिल हैं। यह उपजाऊ घाटियों और पर्वतों से घिरा एक जटिल चित्र प्रस्तुत करता है। यहां पर कई पर्वतीय स्थल

जैसे शिमला, कुल्लू, मनाली, धर्मशाला, चैल, चकराता, मसूरी, नैनीताल, अल्मोड़ा, रानीखेत और दार्जीलिंग हैं। इन पर्वतीय स्थलों के अतिरिक्त भी अनेक स्थल इस क्षेत्र में स्थित हैं।

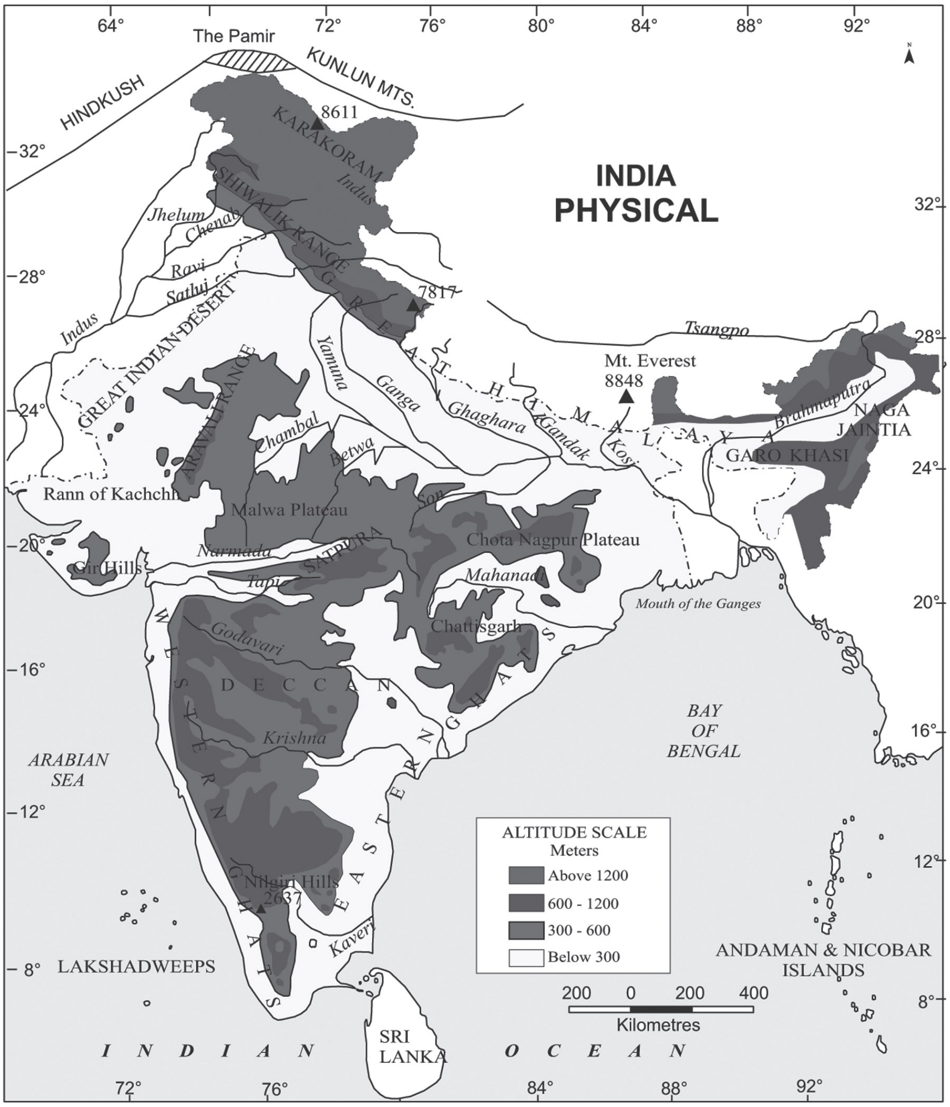

चित्र 12.1: भारत की भौतिक विशेषताएँ

अंग्रेजों ने ग्रीष्म ऋतु की गर्मी से बचने के लिए यहां पर स्थित कुछ पर्वत स्थलों को विकसित किया। विशेषत: देश के मैदानी और प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र के लोगों के बीच तपती गर्मी से राहत पाने के लिए यह पर्वतीय क्षेत्र आज भी काफी लोकप्रिय है।

बाहरी हिमालय अथवा शिवालिक: यह मुख्यत: पर्वतीय शृंखला की सबसे दक्षिण में स्थित शृंखला है जिसे सामान्यतया हिमालय का गिरिपद क्षेत्र कहा जाता है। इसकी ऊंचाई 900 से 1500 मीटर तक है और चौड़ाई 15 से 50 किलोमीटर तक है। यह हिमालय की नव निर्मित पर्वत श्रेणी

है। इस श्रेणी के दक्षिण में उत्तर भारत का मैदानी क्षेत्र है। मैदानी और पर्वतीय भागों के बीच के निकट की भूमि को तराई क्षेत्र कहा जाता है। इसमें बहुत घनी पतझड़ किस्म की वनस्पति पायी जाती है। यहां कई लम्बी तथा समतल घाटियां हैं जिन्हें दून कहा जाता है, जैसे देहरादून।

12.1.2 उत्तरी मैदान

भारत का विशाल उत्तरी मैदान उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार तक फैला हुआ है। यह देश की पश्चिमी सीमा पंजाब और राजस्थान से लेकर पूर्व में गंगा डेल्टा और ब्रह्मपुत्र के मैदान तक विस्तृत है। इसके अंतर्गत तीन मुख्य नदियाँ हैं- सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी। यह पश्चिम से पूर्व लगभग 500 किलोमीटर लम्बा है। इसकी चौड़ाई बिहार में 200 किलोमीटर से पंजाब तथा राजस्थान में 500 किलोमीटर है। उत्तरी मैदान की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें अनेकों धर्मों का उदय हुआ और अनंत काल से संस्कृति का केन्द्र रहा है। हिन्दू, सिक्ख, बौद्ध और जैन धर्मों का उदय इसी क्षेत्र से हुआ है। मैदानी क्षेत्र में अनेक सांस्कृतिक और धार्मिक केन्द्रों का उद्भव हुआ है जो घरेलू और विदेशी पर्यटकों के लिए पर्यटन का केन्द्र बन गए हैं। लगभग यह पूरा क्षेत्र ही पर्यटकों के लिए विभिन्न प्रकार के आकर्षणों के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ विविध धार्मिक स्थलों, विरासतों एवं ऐतिहासिक स्मारकों के स्थल हैं जिनके बारे में आप पर्यटन के इस कोर्स के विभिन्न पाठों में पढ़ेंगे। वस्तुतः ये सब देश के मैदानी भागों में बढ़ते पर्यटन के प्रेरक शक्ति हैं।

12.1.3 प्रायद्वीपीय पठार

विशाल उत्तरी मैदान के दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार स्थित हैं। यह तीन ओर से समुद्रों से घिरा हुआ है। यह विश्व की सबसे पुरानी भू-आकृति है। नर्मदा नदी इस पठार को दो भागों में बांटती हैं। नर्मदा नदी के उत्तर में मध्यवर्ती उच्चभूमि और दक्षिण में दक्खन का पठार है।

मध्यवर्ती उच्चभूमिः यह खनिजों तथा जीवाश्म ईंधन जैसे कोयले की उपलब्धता के लिए महत्वपूर्ण है। अनेक प्रकार के खनिज जैसे लौह-अयस्क, बाक्साईट, तांबा, मैंगनीज, सीसा, जिंक, कोयला, अभ्रक, निकल इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह खनिज औद्योगिक विकास के लिए रीढ़ की हड्डी हैं। इनमें से अनेक मूलभूत संरचनात्मक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह क्षेत्र पर्यटन तथा बहुत से लोगों को रोजगार का अवसर प्रदान करता है।

दक्षिण का पठारः इसका क्षेत्रफल लगभग 7 लाख वर्ग किलोमीटर है। इसकी उत्तरी सीमा सतपुड़ा शृंखला, महादेव एवं राजमहल पहाड़ियों के साथ-साथ हैं। यह उत्तरी भाग दक्षिण के पठार का त्रिकोणीय आकार का आधार है। इसके दो किनारे पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट के साथ-साथ चलते हैं और प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर मिलते हैं। इसका फैलाव मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल तक हैं। पूर्व की ओर बहने वाली अनेक नदियां पश्चिमी घाट से निकलती हैं और पूर्व की ओर बहती है क्योंकि ढ़लान पूर्व दिशा की ओर है। पठार को तीन स्पष्ट वर्गों में बांटा जा सकता है- दक्षिण ट्रैप जिसे काली मृदा भी कहते हैं, पश्चिमी घाट तथा पूर्वी घाट।

पश्चिमी घाट विश्व के दस बड़े जैव विविधता हॉटस्पॉट स्थलों में से एक है। हॉटस्पॉट में अनेक राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीव अभ्यारण्य, जीवमंडल रिज़र्व और आरक्षित वन स्थित हैं। उनमें से अनेक को हैरिटेज स्थल का नाम दिया गया है। पर्वतीय स्थल और हैरिटेज स्थल पर्यटकों में काफी लोकप्रिय हैं। रास्ते में अनेक सुरंगें भी आती हैं। वे अनेक जल प्रपातों के साथ सुन्दर दृश्यावली प्रस्तुत करती हैं। वे सड़क एवं रेलवे से जुड़े हुए हैं। ये आवागमन के साधन पर्यटकों के समय, दूरी और पैसे की बचत कर पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पूर्वी घाट भारत के पूर्वी तट के साथ-साथ एक विच्छिन्न पर्वत शृंखला है। ओडिशा के कोरापुट में निमाईगिरी पहाड़ियां तथा गंजाम जिले में महेन्द्रगिरी पहाड़ियों की ऊंचाई लगभग 1500 मीटर हैं। यह पहाड़ियां घने जंगलों से ढ़की हुई हैं। नीलगिरी पहाड़ियों में स्थित उदगमण्डलम (ऊंटी) दक्षिण भारत का एक लोकप्रिय पहाड़ी क्षेत्र है। इस विच्छिन्न पर्वत शृंखला के दक्षिणी भाग की ऊंचाई कम है। इसका दक्षिणी भाग पश्चिमी और पूर्वी घाट के मिलने से एक संधि-स्थल के रूप में दिखता है।

12.1.4 तटीय मैदान और द्वीप

भारत के तटीय मैदान पूर्वी और पश्चिमी, दोनों तटों पर पाए जाते हैं। पश्चिमी तटीय मैदान पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच स्थित है। यह उत्तर में गुजरात के रण-ऑफ कच्छ से शुरू होकर दक्षिण में कन्या कुमारी तक है। यहां अनेक सुन्दर सोपानी जलप्रपात देखे जा सकते हैं जो विभिन्न क्षेत्रों के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इस मैदान को मूलत: तीन भागों में विभाजित करते हैं।

उत्तरी मैदान को कोंकण मैदान, मध्य भाग को कन्नड़ मैदान तथा दक्षिणतम भाग को मालाबार मैदान के नाम से जाना जाता है। वहां कई लम्बे और तंग लैगून तथा पश्चजल हैं। जैसे वेबनाद- जो केरल में बहुत प्रसिद्ध है।

पूर्वी तटीय घाट पूर्वी घाटों और बंगाल की खाड़ी के बीच स्थित है जो गंगा डेल्टा के दक्षिणी भाग से शुरू होकर कन्याकुमारी तक जाते हैं। कन्याकुमारी के निकट दोनों मैदान - पश्चिमी और पूर्वी मिलकर एक मैदान बन जाते हैं। यह मैदान लगभग 120 किलोमीटर चौड़ा है। ये मैदान उपजाऊ मिट्टी के रूप में बहुत सम्पन्न हैं और यहां चावल का बहुत उत्पादन होता है। इस मैदान में बहुत सी नदियां प्रवाहित होती हैं जो अपने मुहानों पर डेल्टा बनाती हैं। इस तट के साथ बहुत से लैगून बनते हैं जो पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र हैं। चिल्का, पुलिकट और कोलुसु झीलें काफी प्रसिद्ध हैं जो पर्यटकों को बड़ी संख्या में आकर्षित करती हैं।

भारत के द्वीपों के दो समूह हैं। भारत के पास कुल मिलाकर 247 द्वीप हैं। ये दो समूहों में बिखरे हुए हैं। एक अण्डमान निकोबार तथा दूसरा लक्षद्वीप समूह है। बंगाल की खाड़ी में 222 द्वीप हैं तथा बाकी 25 अरब सागर में हैं। दोनों द्वीप समूह अपने बनावट के आधार पर बिल्कुल भिन्न हैं।

अरब सागर के द्वीप अधिकांशत: छोटे प्रवाल भित्तियों के जमावों से बने हैं। अत: उन्हें प्रवाल द्वीप कहा जाता है। बंगाल की खाड़ी के द्वीप मुख्यत: प्लेट विवर्तनीकी (टेक्टॉनिक) गतिविधियों

के कारण बने हैं। अगर उत्तर-पूर्व राज्यों से हिमालय के विस्तार को दक्षिण की ओर बंगाल की खाड़ी में देखें तो यह हिमालय की ही व्युत्पत्ति प्रतीत होता है। पर्यटन की दृष्टि से द्वीपों का विशेष महत्व हैं।

क्रियाकलाप 12.1

भारत का एक रैखिक मानचित्र लीजिए और उस पर देश के विभिन्न भौतिक प्रदेशों को दर्शाइए। उस मानचित्र पर अपनी स्थिति अंकित कीजिए। भौतिक स्वरूप के आधार पर अपने निवास क्षेत्र की विशेषताएँ लिखिए। अपने क्षेत्र की पर्यटन गतिविधियों का ब्यौरा लिखिए। यदि आपके क्षेत्र में पर्यटन की कोई गतिविधि नहीं है तो इसके कारणों की एक सूची बनाइए।

पाठगत प्रश्न 12.1

1. दक्षिण (दक्कन) के पठार की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।
2. भारत का कौन-सा घाट जैव विविधता हॉटस्पॉट के कारण लोकप्रिय है?
3. अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप द्वीप समूह के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

12.2 भारत में पर्यटन स्थलों का वितरण

लगभग पूरे भारत में पर्यटकों के लिए प्राकृतिक और सांस्कृतिक आकर्षण के कई स्थल हैं। इसलिए पूरे देश में पर्यटन केन्द्रों का विस्तार है। ये आकर्षण देश के भौतिक स्वरूपों से विशेष रूप से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए पर्वतीय स्थल पहाड़ियों और पर्वतों पर स्थित हैं जो ठण्डे मौसम की स्थिति प्रदान करते हैं। पर्वतीय क्षेत्र विविध प्रकार के साहसी पर्यटन का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जैसे रॉक क्लाइम्बिंग, ट्रैकिंग, एंगलिंग, पैराशूटिंग, राफ्टिंग इत्यादि के अवसर प्रदान करते हैं। हिमालय की नदियों में गंगा, अलकनन्दा, चिनाब, व्यास इत्यादि में 'व्हाईट वाटर राफ्टिंग' के आधार और अवसर प्रदान करती हैं। समुद्री तटों के किनारे 'बीच' पाए जाते हैं। समुद्र, रेत और सूर्य का मेल पर्यटकों के लिए बहुत आकर्षक हैं। जैसे केरल की विश्वविख्यात कोवलम बीच। देश के कई भाग जंगल से भरे पड़े हैं। यहां अनेक राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीव अभ्यारण्य, संरक्षित वन हैं जो कुछ पर्यटकों के लिए मनमोहक हैं। अनेक पर्यटकों के लिए लोगों की धार्मिक आस्था भी आकर्षण का कारण है। इसलिए ऐसे स्थानों की पर्यटकों को तलाश रहती हैं। पर्यटकों के लिए कुछ महत्वपूर्ण स्थानों को नीचे (चित्र 12.2) में दिखाया गया है।

चित्र 12.2: भारत के पर्यटन के प्रमुख गंतव्य स्थल

12.2.1 प्रमुख पर्यटन सर्किट

भारत में अनेक पर्यटन स्थल हैं परन्तु उनमें से कुछ स्थानों की अन्य के मुकाबले अधिक मांग हैं। अत: पर्यटकों को इन स्थानों पर बिना कठिनाई के जाने के लिए विशेष प्रबन्ध किए गए हैं। यह भी ध्यान रखा जाता है कि यहां आने-जाने में सुविधा और सस्ता होने के साथ सहज और तीव्र होना चाहिए। इसलिए पर्यटकों की मांग के अनुसार टूरिस्ट आपरेटरों ने अनेक टूरिस्ट सर्किट रूट तैयार किए हैं। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं:

1. दिल्ली-आगरा-फतेहपुर सीकरी-जयपुर-दिल्ली

2. ग्वालियर-खजुराहो-भोपाल-ग्वालियर

3. सारनाथ-कुशीनगर-बोधगया-सारनाथ

4. भुवनेश्वर-कोणार्क-पुरी-चिल्का-भुवनेश्वर

इनके अतिरिक्त भी अन्य कई रूट हैं। चित्र संख्या 12.3 से ऐसे रूटों के स्थान और मार्गों की जानकारी ले सकते हैं।

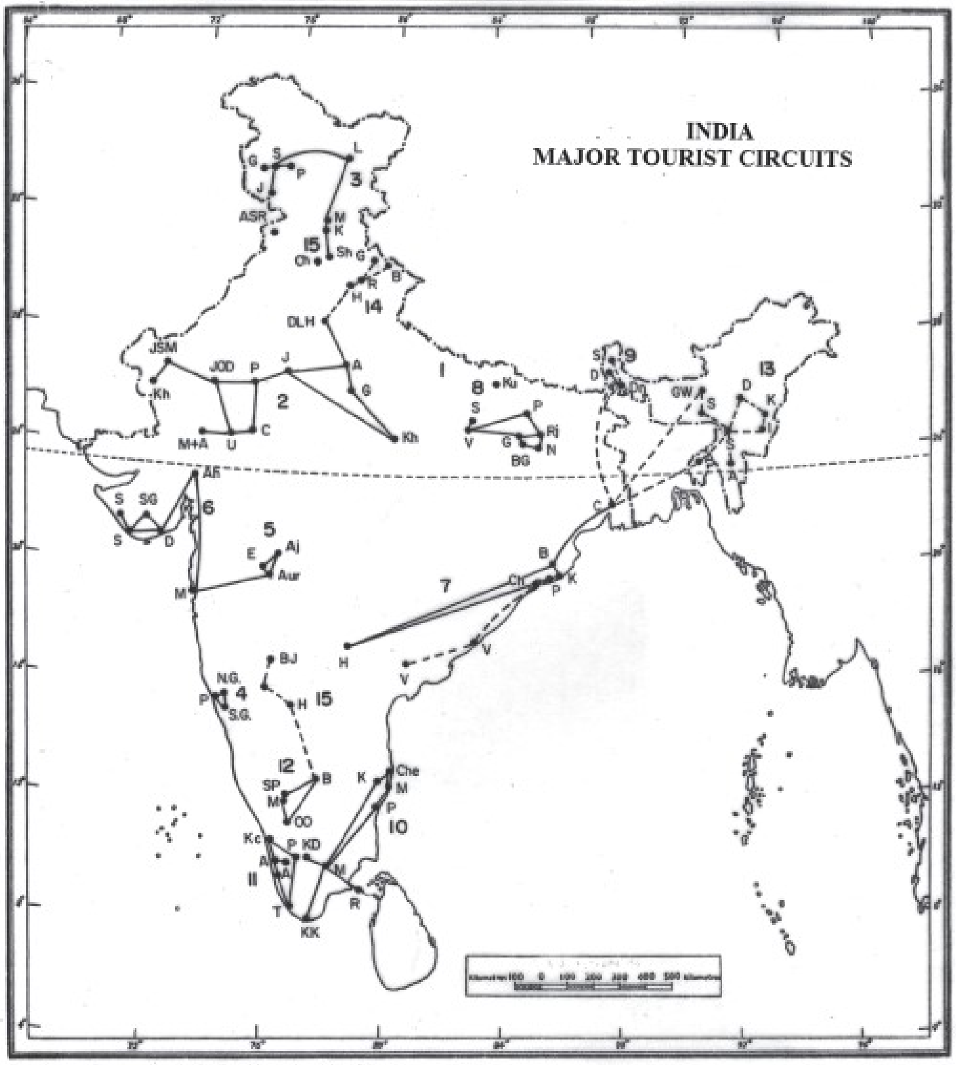

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1996.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright 1996

चित्र 12.3: भारत के प्रमुख टूरिस्ट सर्किट

12.3.2 पर्वतीय स्थल

पर्वतीय स्थल पहाड़ियों और पर्वतीय ढ़लानों पर स्थित होते हैं (चित्र 12.4)। ये स्थल गर्मियों के मौसम में भी ठण्डे होते हैं। ऐसा ऊंचाई के कारण होता है। 165 मीटर की ऊंचाई बढ़ने के साथ तापमान 1°C कम हो जाता है। ऐसा ऊंचाई पर वायु के विरल होने के कारण होता है। सूर्य का विकिरण सबसे पहले धरती पर पहुंचता है। पृथ्वी का धरातल गर्म होने पर दीर्घ तरंगों के रूप में ताप का विकिरण करता है। इस प्रकार वायु गर्म होती है। वायु के विरल होने के कारण सूर्य के ताप का प्रभाव कम होता है। इसी कारण से पहाड़ियां और पर्वतीय ढलानें गर्मी में भी ठण्डी होती हैं। इस प्रकार का मौसम बहुत सुविधाजनक और आन्नददायी होता है। जब मैदानी और पठारी भागों में तेज गर्मी होती है तो देश के विभिन्न भागों से लोग कुछ दिन पर्वतीय स्थलों में गुजारना चाहते हैं।

टिप्पणियाँ

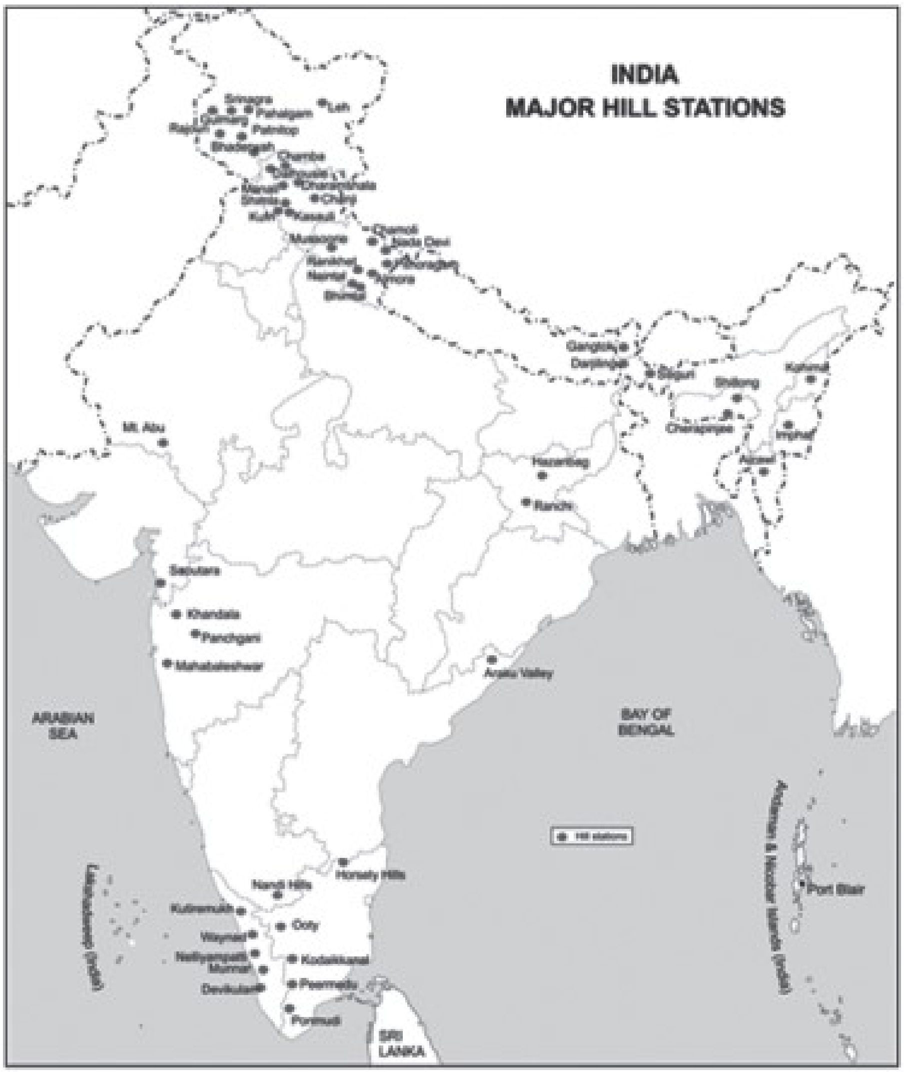

चित्र 12.4: भारत में प्रमुख पर्वतीय स्थल

टिप्पणियाँ

12.3.3 साहसिक पर्यटन

साहसिक पर्यटन उसको कहते हैं जिसमें पर्यटक कम परिचित वाले क्षेत्रों और स्थानों का खासकर प्रतिकूल परिस्थितियों में किसी प्रकार की खोज में शामिल होते हैं। इसमें उनके शरीर को कुछ हद तक खतरा अथवा नुकसान हो सकता है। साहसिक पर्यटन तीन प्रकार के हैं: (i) हवाई साहसिक पर्यटन (ii) जल साहसिक पर्यटन (iii) भू-साहसिक पर्यटन।

हवाई साहसिक पर्यटन में मुख्यत: पैराशूटिंग और पैराग्लाईडिंग; जल साहसिक पर्यटन में राफ्टिंग और वाटर स्कीइंग शामिल होते हैं। भारत में भू-साहसिक पर्यटन बहुत लोकप्रिय है जिनमें पर्वतारोहण, एंगलिंग, माऊन्टेनरिंग, ट्रेकिंग, पहाड़ों में साइकिल चलाना, स्कीईंग इत्यादि होते हैं। इस प्रकार का पर्यटन बीहड़ पर्वतीय क्षेत्रों में ही अधिक होता है। भारत में यह हिमालय तथा पठारी क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय है।

तालिक 12.1: भारत में मुख्य पर्वतीय मार्गों का विवरण

पर्वतीय मार्ग का नाम	ऊंचाई (मीटर में)	दिन	कठिनाई का स्तर	ट्रेकिंग के लिए उपयुक्त समय
मंत्रमुग्ध करने वाली मारखा घाटी	5150	12-15	सामान्य	जून से अक्तूबर
लद्दाख का जमी हुई नदी का मार्ग	3850	17-21	बहुत कठिन	जनवरी से मार्च
स्ट्राइकिंग स्टाक कांगरी	6153	11-13	आसान	जून से अक्तूबर
ग्लोरियस गोयचा ला	4940	12-15	सामान्य	मार्च से मई
होली किन्नर कैलाश सर्किट	6500	12-16	सामान्य से कठिन	जुलाई से अक्तूबर
पिन पार्वती वैली (देवताओं की)	5319	13-17	सामान्य से कठिन	जून से अक्तूबर
हेमकुण्ड और फुलों की घाटी	3853	9-13	आसान	मई से अक्तूबर
गंगोत्री-गौमुख-तपोवन	4463	9-13	सामान्य	मई से अक्तूबर
बाऊन्डलेस नन्दा देवी	4268	10-13	सामान्य	जून से अक्तूबर
डोडीताल-पोराणिक झील	4150	6-8	सामान्य	मई से अक्तूबर
मैजेस्टिक खाटलिंग ग्लेशियर	4200	12-14	सामान्य	मई से अक्तूबर
अकथनीय रूपकुण्ड झील	5029	7-9	सामान्य	मई से अक्तूबर
गढ़वाल पर्वतीय कौरी दर्रा	4575	9-12	सामान्य	अप्रैल से मध्य जून और अगस्त से सितम्बर
परफेक्ट पंचचोली बेस कैम्प	4260	7-10	सामान्य	मई से अक्तूबर
मनोरंजक मिलान ग्लेशियर - कुमांऊ	4150	13-15	सामान्य से कठिन	जून से अक्तूबर
पिंडारी ग्लेशियर का साफ्ट एडवेंचर	3990	11-13	आसान	मई से अक्तूबर
काफनी ग्लेशियर - हिडन जेम	3892	9-11	आसान	मई से अक्तूबर
पदम - दारचा - हिम गृह	4950	9-12	आसान	जून से अक्तूबर
हेमिस - निमालिंग हाईकिंग	5270	8-10	सामान्य	जून से अक्तूबर

तालिका 12.1 हिमालय क्षेत्र के ट्रैकिंग मार्गों को दर्शाती है। इनके अतिरिक्त भी हिमालय तथा पठारी क्षेत्रों में अनेक ट्रैकिंग मार्ग हैं।

पिछले कुछ समय से साहसिक पर्यटन काफी लोकप्रिय हो रहा है। ऐसे अनेक कार्यक्रम पहले ही तैयार किए जा चुके हैं जबकि नेशनल ज्योग्राफिक, नेशनल ज्योग्राफिक वाईल्ड, एनीमल प्लेनेट, डिस्कवरी, डिस्कवरी साइन्स इत्यादि इन्हें लोकप्रिय बनाने में जुटे हुए हैं।

12.3.4 वन्यजीव अभयवन और राष्ट्रीय उद्यान पर्यटन

वन्यजीव अभयवन विशेष रूप से ऐसा क्षेत्र है जहां किसी भी प्रकार का मानवीय हस्तक्षेप वर्जित होता है। उस क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति किसी जानवर का शिकार नहीं कर सकता है। अत: यह संरक्षित क्षेत्र होता है और निकटवर्ती क्षेत्र को मूल रूप से रखने का प्रयास किया जाता है। राष्ट्रीय उद्यान ऐसे क्षेत्र हैं जहां वहां के पौधों और जानवरों तथा उनके आश्रय स्थलों, प्राकृतिक सौन्दर्य के स्थानों, ऐतिहासिक धरोहरों और मौलिक संस्कृति को बनाए रखा जाता है। अत: दोनों वन्यजीव अभयवन और राष्ट्रीय उद्यान का विशेष महत्व है, खासकर प्राकृतिक परिवेश को बचाए रखने एवं जागरुकता पैदा करने के लिए।

पर्यटन गतिविधियों को वन्य जीव विहारों और राष्ट्रीय उद्यानों में संचालित किया जाता है। इससे हमें अपने जीवन में उनके महत्व का पता चलता है। यद्यपि आरम्भिक स्थानों पर पर्यटन आयोजित करने से इर्द-गिर्द के क्षेत्र पर बुरा प्रभाव डालता है, परन्तु फिर भी इनसे उनके महत्व के बारे में जागरुकता पैदा होती है।

वन्यजीव अभयवन और राष्ट्रीय उद्यान प्राय: बीहड़ क्षेत्रों से जुड़े होते हैं जहां वन क्षेत्र अधिक होता हैं। ये दोनों मिलकर कुल भौगोलिक क्षेत्र का 4.5 प्रतिशत हैं। इस क्षेत्र की इसलिए भी जरूरत कम होती है क्योंकि इस क्षेत्र का धरातल उबड़-खाबड़ है और वहां कृषि गतिविधियां बहुत विकसित नहीं हो सकती है। पूरे देश में कुल 442 वन्य जीव अभयवन हैं। उनमें से 41 बाघ संरक्षित वन हैं। कुछ वन्य जीव अभयवनों को विशेष उद्देश्य के लिए विकसित किया जाता है जैसे पक्षी विहार। राष्ट्रीय उद्यानों का राष्ट्रीय स्तर पर बहुत महत्व है। वर्तमान में 39,919 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर 102 राष्ट्रीय उद्यान हैं और कई अन्य अभी राष्ट्रीय पहचान की प्रक्रिया में हैं। मानस, कान्हा, रणथम्बोर, दुधवा, बांधवगढ़, जिम कार्बेट, राजाजी, काजीरंगा सभी पर्यटकों के पसन्दीदा स्थान हैं।

12.3.5 'बीच' पर्यटन (समुद्री तट पर पर्यटन)

'बीच' ऐसी भूआकृति को कहा जाता है जो किसी समुद्र तट के साथ-साथ पाया जाता है। यह प्राय: रेत, कंकर, और बजरी से निर्मित होता है जो लहरों से शैलों के कटाव व जमाव से बनता है। इसलिए 'बीच' ऐसे क्षेत्रों में विशेष रूप से विकसित होते हैं जहाँ लहरों की क्रिया से कटी हुई सामग्री जम जाती है। भारत का समुद्री तट लगभग 7000 किमी लम्बा है। इतना लम्बा समुद्री किनारा खुबसूरत 'बीच' शांतिदायक एवं शोकहारी पर्यावरण के साथ-साथ हरियाली, पूर्णतया विश्राम एवं तरोजाजा होने के लिए पर्याप्त है। ये पर्यटकों के दिल और दिमाग को नई स्फूर्ति प्रदान करते हैं। पानी से भरी गीली रेत पर समुद्र के नीले जल के साथ-साथ चलना एक अजीब रोमांच पैदा करता है। समुद्री जल का अनंत दृश्य मायावी चिन्ताओं से दूर होने का अनुभव प्रदान करता है। 'बीच' से सूर्योदय और 'सूर्यास्त' को देखना वास्तव में अति सुन्दर होता है। समुद्र, रेत और सूरज की धूप सभी चिन्ताओं का संहार करती हैं। 'बीच' की अवस्थिति का सौन्दर्य अनेक घरेलू और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

भारत के महत्वपूर्ण 'बीचों' को चित्र 12.5 में देखा जा सकता है।

चित्र 12.5: भारत में प्रमुख 'बीच'

क्रियाकलाप 12.2

भारत के दो रेखा मानचित्र लीजिए। एक मानचित्र पर भारत के पर्वतीय स्थलों को दर्शाइए। तैयार किए हुए इस मानचित्र के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास कीजिए।

(अ) मानचित्र पर आप किस प्रकार का प्रतिरूप पाते हैं?

(ब) अधिकांश पर्वतीय स्थल कहां पर स्थित हैं?

(स) हिमालय क्षेत्र में पर्वतीय स्थलों के अधिक होने के क्या कारण हैं?

दूसरे मानचित्र पर देश के 'बीचों' को दर्शाइए। 'बीचों' पर पर्यटन की बढ़ती लोकप्रियता के मुख्य कारण क्या हैं?

पाठगत प्रश्न 12.2

1. भारत के प्रमुख पर्यटन सर्किटों का वर्णन कीजिए।
2. उत्तरी भारत के प्रमुख पर्वतीय स्थलों के नाम लिखिए।
3. तीन प्रकार के साहसिक पर्यटन की व्याख्या कीजिए।

12.4 भारत में अति लोकप्रिय वन्य जीव अभयवन

- **रणथम्बोर वन्य जीव अभयवन:** जयपुर से 130 किमी. की दूरी पर 392 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ राजस्थान में रणथम्बोर वन्य जीव अभयवन है। रणथम्बोर के पर्णपाती वन बाध देखने के अवसर प्रदान करता है। साम्बर, चीतल और पैंथर जैसे जानवरों को पर्यटक देख सकते हैं। प्रात: और दोपहर बाद के सफारी पर्यटकों को ऐसे सम्भावित स्थलों पर ले जाते हैं जहां बाधों के बच्चे उनके रास्ते में दिख सकें।

- भारत के प्राकृतिक वास में जंगली जानवरों को देखने का सबसे प्रमुख स्थान **कार्बेट नेशनल पार्क** है जो उत्तराखण्ड में हिमालय की तलहटी में स्थित है। दुर्लभ वनस्पति और वन्य जीवों के कारण यह भारत का वन्यजीव केन्द्र बन चुका है। कार्बेट पार्क जंगली जानवरों के साथ मिलने की अनंत संभावनाएँ प्रदान करता है। अत: यहाँ पर्यटक आते हैं और यहां बड़े विचित्र जानवरों और प्रकृति के साथ अपने अनूठे संबंध को आत्मसात कर पाते हैं।

- मध्य प्रदेश की विध्यांचलशृंखला में अवस्थित **बांधवगढ राष्ट्रीय उद्यान** बेशकीमती सफेद बाघों का मौलिक वास था, जहां रेवा में उन्हें पहली बार देखा गया था। वन्य जीवों का यह हरा भरा स्वर्ग लगभग 437 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। वन्य जीवों के प्रेमी यहां बहुत कुछ देख सकते हैं। यहां आसानी से दिख जाने वाले जानवरों में नीलगाय, चिंकारा, और जंगली सुअर शामिल हैं। लोमड़ी भी अचानक दिख सकती है। यहाँ पार्क में बाघों की अच्छी-खासी संख्या है, अत: उन्हें देख पाने की अच्छी संभावना होती है।

- ईश्वर के अपने घर केरल के पश्चिमी घाटों की ऊंची चोटी पर सुरम्य **पेरियार राष्ट्रीय उद्यान** तथा बाघ रिजर्व अवस्थित है। यह उद्यान कॉर्डमॉम पहाड़ियों के घने जंगलों में पेरियार नदी के निकट बसे हाथियों के बड़े-बड़े झुण्डों के लिए प्रसिद्ध है।

- असम में **काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान** वन्य जीवों के लिए स्वर्ग है। यह एक सींग वाले गैंडा, जंगली हाथी एवं पानी वाले भैंसों के लिए स्वर्ग है। यह एक प्रमुख बाघ रिजर्व तथा वैश्विक धरोहर स्थल भी है। हांग हिरण, सुस्त भालू, टोपी वाले लंगूर और विश्व के कुछ बड़े अजगर यहां पाए जाते हैं। जब नदियां उफान पर होती हैं तो कदाचित विशाल डोल्फिन्स को भी देखा जा सकता है।

- बंगाल के दक्षिणी दलदली मैंग्रोब स्थित **सुन्दर बन राष्ट्रीय उद्यान** रॉयल बंगाल टाइगर्स का साम्राज्य है। यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर सुन्दरवन 4264 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला

हुआ है। इसके दक्षिणी भाग में धीरे-धीरे समुद्र का प्रसार हो जाता है। चिलचिलाती धूप से बचने के लिए दलदल में आराम फरमाते अनेक जंगली जानवरों को मैंग्रोव के नदी मुहानों पर देखा जा सकता है। पर्यटक यहां पर सांप, मगरमच्छ, मछली पकड़ने वाली बिल्लियों तथा अन्य समुद्री जीवों को भी देख सकते हैं।

- भारत के प्रसिद्ध टाइगर्स रिज़र्वों में से एक **'कान्हा' राष्ट्रीय उद्यान** मध्य प्रदेश में बंजर और हेलों घाटी में स्थित है। विश्व के सभी कोनों से वन्य जीवों को पसंद करने वाले पर्यटक कान्हा रिज़र्व में आते हैं और इसमें पाये जाने वाले बाघों, धब्बेदार हिरणों और भेड़ियों को देखा जा सकता है। वामनी दादर की चोटी का सूर्यास्त और बारहसिंगों अथवा दलदली हिरणों के साथ फोटोग्राफी चोटी का क्षण भी सामान्यतया यात्रा पैकेज में जोड़ा जाता है। यहां का दृश्य बड़ा ही मनोहारी होता है।
- **मुडुमलाई राष्ट्रीय उद्यान** नीलगिरि के उत्तर-पश्चिम में तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक के मिलन क्षेत्र पर स्थित पड़ोसी वन्यजीव रिजर्व में जाने का रास्ता प्रदान करता है। इसमें विविध प्रकार के वन्य जीव तथा सदाबहार उष्ण कटिबंधीय वनस्पतियाँ एक ओर हैं तो दूसरी ओर पर्णपाती वन हैं। पर्यटक मुडुमलाई में सफारी का आनन्द ले सकते हैं। यहां पर पाए जाने वाले जानवरों में साम्भर, चीतल, जंगली सूअर, प्राइमेट और हाथियों के साथ-साथ बाघों को भी देखा जा सकता है।
- एशियाई शेर के अंतिम संरक्षण के रूप में प्रायद्वीपीय गुजरात के दक्षिण-पश्चिम भाग पर **गिर वन्यजीव अभयवन** स्थित है। यहाँ पर पश्चिमी भाग में पर्णपाती वन पाये जाते हैं। भारत के बड़े वन्य जीव आकर्षणों में से एक 'गिर अभयवन' है जो बिल्ली प्रजाति के बड़े जानवरों का एक प्रसिद्ध केन्द्र है जिनमें शेर और चीते भी शामिल हैं। वस्तुत: गिरवन में देश के सर्वाधिक चीते हैं। इस अभयवन के पानी में अनेक मगरमच्छ पाए जाते हैं।
- **केवलादेव** राजस्थान में स्थित है और यहां कई प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं। पूर्व में यह महाराजाओं का बतख शिकार स्थल अब प्रवासी पक्षियों का सबसे बड़ा क्षेत्र बन गया है। पर्यटक प्रसिद्ध सायबेरियन क्रेन बैबलर्स, रोड काईट, वल्चर और लैपविंग को देख सकते हैं। हरी-भरी भूमि और सुन्दर झीलें पर्यटकों को देखने एवं आनन्द लेने के लिए किसी त्योहार से कम नहीं होता है।

12.4.1 भारत के प्रसिद्ध पक्षी विहार: 1200 प्रजातियों से अधिक पक्षियों के घर

भारत स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों की अनेक प्रजातियों का घर है। भारत के पक्षी विहार पक्षी-प्रेमियों में बहुत लोकप्रिय हैं। स्थानीय सुन्दर पक्षियों मे मोर, विशाल भारतीय बस्टर्ड, हार्नबिल, किंगफिशर और हिन्दुओं में पवित्र माने वाले वाले गरूड़ इत्यादि कुछ प्रसिद्ध नाम हैं। ग्रेट इन्डियन हार्न बिल भारत के जंगलों में पाए जाने वाले सभी हार्न बिल में सबसे बड़ा पक्षी है। कुलिक (रायगंज) पक्षी विहार एशिया में सबसे बड़ा पक्षी विहार है। भारत में पक्षियों को देखने और ट्विचिंग की दृष्टि से नवाबगंज का पक्षी विहार पर्यटकों के लिए आदर्श पर्यटन स्थल है। ट्विचिंग शब्द का सन्दर्भ ऐसे पर्यटकों से है जो दुर्लभ पक्षियों को निहारने के लिए बहुत दूरी तय करके आते हैं।

- **भरतपुर पक्षी विहारः** यह पक्षी विहार राजस्थान के भरतपुर में स्थित भारत का एक प्रसिद्ध पक्षी विहार है। इसको केवलादेव घना राष्ट्रीय उद्यान भी कहते हैं। सर्दी के मौसम में यहां हजारों दुर्लभ और संकटग्रस्त प्रजाति के पक्षियों का आगमन होता है। सर्दी के मौसम में पक्षी प्रेमियों का यह सबसे चहेता स्थल बन जाता है जहां पक्षी प्रेमी विश्व के सबसे आकर्षक पक्षियों को देखने के लिए आते हैं।

- **सुलतानपुर पक्षी विहारः** हिमालय से उत्तर की ओर से आने वाले रंगीन पंखों वाले प्रवासी पक्षियों की अनेक प्रजातियों का घर है।

- **सलीम अली पक्षी विहारः** गोवा में माण्डवी नदी के साथ स्थित 'चोराव' (Chorao) द्वीप पर स्थित है जो अनेक दुर्लभ प्रकार के घरेलू तथा प्रवासी पक्षियों के प्रजातियों का घर है।

- **कुमारकम पक्षी विहार** केरल में अवस्थित है जिसे वेमबनाद पक्षी विहार भी कहते हैं। यह बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षियों जैसे फ्लाई कैचर, टील, साईवेरियाई सारस, क्रेन, तोते तथा कठफोड़वे इत्यादि को आश्रय प्रदान करता है। केरल में पक्षियों को देखने का सबसे अच्छा तरीका नौका विहार है। केरल में अन्य पक्षी विहार मंगलावनम तथा थाक्कड़ पक्षी विहार है जो परियार नदी के तट पर स्थित है। यह कुछ दुर्लभ पक्षी प्रजातियों तथा अद्वितीय प्राणी जगत के लिए प्रसिद्ध है।

- **रंगानाथिटु पक्षी विहार** कर्नाटक के कावेरी नदी के तट पर स्थित है। सुन्दर-आकर्षक प्रवासी पक्षियों जैसे लाईट इबिस (सारस), इगरेट, बगुला, तीतर, हीरोन (क्रोंच), दरियाई पूंछ वाली चिड़िया, स्केन बर्ड तथा स्टोन प्लावर पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। यह कृष्णराज सागर बांध के निकट स्थित प्रसिद्ध वृन्दावन गार्डन से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

- **वेदानथंगल पक्षी विहार** तमिलनाडु में स्थित भारत का सबसे पुरातन पक्षी विहार है। वेदानथंगल झील का क्षेत्र अनेक प्रकार के पक्षियों जैसे पिनटेल, गार्गने, ग्रे-वैगटेल, नीले पंखों वाली टील, सैन्ड पाइपर जैसे अनेक पक्षियों को आकर्षित करता है। तमिलनाडु का 1/6 भाग वनों से ढ़ँका हुआ है जो पशु और पक्षी प्रेमियों का स्वर्ग है। आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु की सीमा पर स्थित पुलिकट झील पक्षी विहार, कुन्थकुलम पक्षी विहार भी पक्षी प्रेमियों में प्रसिद्ध है।

- **कौंडिया पक्षी विहार** आन्ध्र प्रदेश में चितूर के निकट स्थित भारत के सर्वश्रेष्ठ पक्षी विहारों में से एक है। इस क्षेत्र में उबड़-खाबड़ सतह तथा गहरी घाटियां हैं। कैगल और कौंडिया दो प्रमुख सरिताएँ हैं। ये सरिताएँ इस पक्षी विहार से होते हुए बहती है। कौंडिया पक्षी विहार भारत में सर्वश्रेष्ठ वन्य जीव और पक्षी दर्शन स्थल प्रस्तुत करता है। कोलेरू झील मीठे पानी की झील है और यहाँ पर स्थित कोलेरू झील पक्षी विहार भी अनेक प्रकार के प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करता है।

- **चिल्का झील पक्षी विहार** ओडिशा में पुरी के निकट स्थित है और पर्यटकों में बहुत लोकप्रिय है। यह एशिया में खारे पानी की सबसे सुन्दर झील है और अनेक प्रकार के पक्षियों से समृद्ध होने के कारण प्रसिद्ध है। चिल्का झील पक्षी विहार के रूप में काम करती है तथा भारत में सर्दियों में प्रवासी पक्षियों के लिए आकर्षक स्थल है। यह भारत में पक्षी प्रेमियों के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थानों में से एक है।

टिप्पणियाँ

- महाराष्ट्र में **मयानी पक्षी विहार** अनेक प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करता है जैसे साइबेरिया से फ्लेमिंगो बहुत बड़ी संख्या में आते हैं। यह भारत में सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रमुख पक्षी विहारों में से एक है।

- **नल सरोवर पक्षी विहार** एक बड़ी झील और व्यापक दलदली जमीन से बना विहार गुजरात के अहमदाबाद में स्थित है। यह भारत का सबसे बड़ा दलदली पक्षी विहार है। वहां फ्लैमिंगो, पेलिकन्स, स्पूनबिल्स, एवोकेट्स, कूट्स, पिनटेल्स, छोटे कोरमोरेन्ट्स, छोटे ग्रेब्स और शोवलेर्स देखे जा सकते हैं। यह भारत में सबसे व्यस्त पर्यटक स्थलों में से एक है।

12.5 पर्वतीय स्थल: पर्यटकों के लिए प्राकृतिक आकर्षण

भारत में लोकप्रिय पर्वतीय स्थल

- **शिमला :** गर्मियों में अंग्रेजों की राजधानी होती थी जब वे भारत पर शासन करते थे। आज यह हिमाचल प्रदेश की राजधानी है। यह ठंढ़ा और एक आकर्षक शहर है जो ओक, पाईन (चीड), और रोडोडेंड्रोन के जंगलों से घिरा हुआ है। यह औपनिवेशिक प्रकार के भवनों तथा ऐतिहासिक रेलवे के कारण प्रसिद्ध है। इस शहर के मुख्य पहचान बिन्दुओं में यहां का पुराना चर्च है जिसकी सुन्दर कांच की खिड़कियां हैं, स्कैन्डल प्वाइंट से दिखते सम्मोहक दृश्य तथा वाईसराय की लॉज है। ऑवजरवेटरी हिल से सूर्योदय एवं सूर्यास्त को देखना भी अति रोचक है।

- **मनाली :** हिमालय की शान्त पृष्ठभूमि में बसा मनाली मदहोशी और साहस का ऐसा मेल प्रस्तुत करता है जिसने इसको उत्तरी भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय स्थल बना दिया है। हिमाचल प्रदेश की कुल्लू घाटी में अवस्थित यह जादुई स्थान ठण्डे देवदार के जंगलों तथा कलकल करती व्यास नदी से घिरा हुआ है।

- **दार्जिलिंग :** पश्चिम बंगाल में अवस्थित यह स्थान अपने हरे भरे चाय बगानों तथा विश्व की तीसरी ऊंची कंचनजंगा की चोटी के अचम्भित करने वाले दृश्य के कारण भी प्रसिद्ध है। इस शहर में जगह जगह मठ, वनस्पतियों के बाग और एक चिड़ियाघर है। दार्जीलिंग घूमने, चाय बगानों, गांवों तथा बाजारों को देखने का एक अदभुत स्थान है।

- उत्तराखंड के कुमायूँ क्षेत्र में बसा पर्वतीय स्थल **नैनीताल** गर्मियों के लिए एक लोकप्रिय स्थल है। यहां मणि सी चमकती सुन्दर नैनी झील तथा अनेक जंगल हैं। जंगलों में लम्बी सैर करना तथा नैनी झील में नौकायान करना यहां के मुख्य आकर्षण हैं।

- उत्तराखंड में देहरादून के निकट **मसूरी** उत्तर भारतीयों के लिए सप्ताहान्त का लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। यहां विशेषरूप से पर्यटकों के लिए अनेक सुविधाएँ हैं। गन हिल तक केवल कार की सवारी, केमल बैक रोड पर लम्बी सैर करना, कैम्पटी जलप्रपात, लाल टिब्बा तक घुड़सवारी आदि खुबसूरत आनन्ददायी क्रियाएँ हैं। लाल टिब्बा मसूरी की सबसे ऊँची व सुन्दर चोटी है। यहां से विशाल हिमालय के दर्शन भी किए जा सकते हैं।

- **श्रीनगर:** जम्मू और कश्मीर की ग्रीष्म राजधानी श्रीनगर में प्यारी झीलें, सुन्दर शिकारे और हाऊस बोट्स हैं। यहां के बागों में मुगल प्रभाव देखा जा सकता है क्योंकि इन्हें मुगल राजाओं ने बनवाया था। श्रीनगर में एशिया का सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन भी है जबकि जोखिमों से प्यार करने वाले पर्यटक सर्दियों में यहां स्नो स्काईंग के लिए आते हैं।

- केरल में **मुन्नार** बड़े बड़े चाय बागानों के लिए प्रसिद्ध है। एक सुन्दर झील को घेरे कण्डेल के चाय-बागान में पत्तियां तोड़ने और उसके प्रसंस्करण को देखने और जानने का अवसर मिलता है। इस क्षेत्र को टेढ़े-मेढ़े रास्ते, धुंधली पहाड़ियों एवं मनमोहक पौधों और वन्य जीवों का वरदान प्राप्त है। यहां दक्षिण भारत की सबसे ऊंची चोटी अनामुडी तक के साहसिक ट्रेक तथा एरावीकुलम राष्ट्रीय उद्यान को देखना अथवा रॉक-क्लाईम्बिंग और पैराग्लाईडिंग पर जाना बहुत रोचक लगता है। यहां अवसर मिलते ही मन्नार देखने के लिए पर्यटकों का लालायित रहना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

- तमिलनाडु में **ऊंटी** गर्मियों के ताप से बचने के लिए एक शान्त स्थल है जिसके लिए आप मेटुपलयम से छोटी ट्रेन ले सकते हैं। ऊँटी के सबसे चर्चित आकर्षणों में 22 एकड़ में फैला सरकारी वनस्पति उद्यान है। यहां ग्रीष्म उत्सव के रूप में प्रति वर्ष मई में 'पुष्प प्रदर्शनी' का आयोजन, ऊँटी झील में नौकायन तथा नीलगिरी पहाड़ियों में सुन्दर दृश्य का दीदार करने के लिए डोडाबेटा चोटी पर चढ़ना प्रमुख हैं।

- **कोडईकनाल** मदुरै से 120 किलोमीटर दूर तमिलनाडु की पलानी हिल्स में बसा हुआ है। यहां वनस्पति और प्राणी जगत की प्रचुर विविधता है। यहां आप नाशपाती के बाग और तिकोनी छत वाले आकर्षक भवनों को देख सकते हैं। कोडईकनाल में जड़ी बूटियों तथा सुगन्धित तेलों को खरीदना बहुत ही रोचक है जिसमें यूकिलिप्टस का तेल विशेष रूप से लोकप्रिय हैं।

- **माऊन्ट आबू:** समुद्री तल से 1220 मीटर की ऊंचाई पर स्थित माऊन्ट आबू अरावली शृंखला का सबसे ऊंचा स्थल है। माऊंट आबू का शब्दिक अर्थ है 'बुद्धिमत्ता की पहाड़ी' तथा यह हरी भरी जंगली पहाड़ियों के बीच एक मरूद्यान है। यह राजस्थान के वीरान रेगिस्तान के

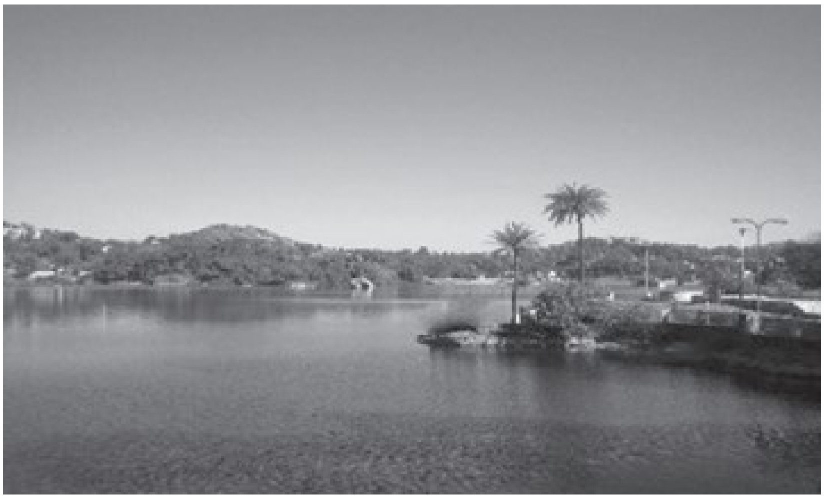

चित्र 12.6: माऊन्ट आबू पर्वतीय स्थान

टिप्पणियाँ

बिल्कुल विपरीत है तथा राजस्थान का एक मात्र पर्वतीय क्षेत्र है। यहां पर आप दिलवाड़ा जैन मन्दिर देख सकते हैं जो भारत में जैन वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। मन्दिर के भीतरी भाग में सफेद संगमरमर पर बहुत सुन्दर कटाई करके कलाकृतियां बनाई गई हैं। विमल वाशी मन्दिर और तेजपाल मन्दिर उन सबमें सर्वाधिक सुन्दर हैं। यह पर्वतीय क्षेत्र नक्की झील के लिए भी प्रसिद्ध है। देवी दुर्गा को समर्पित एक प्राचीन मन्दिर माऊन्ट आबू के उत्तर में 3 किलोमीर की दूरी पर अवस्थित है। इसको पहाड़ी की प्राकृतिक गुफ़ा में बनाया गया है।

माऊन्ट आबू के निकटवर्ती क्षेत्रों में भी रोचक पर्यटक स्थल हैं जैसे गुरू शिखर (15 किमी), अचलेश्वर महादेव मन्दिर (11 किमी.), माऊन्ट आबू वन्य जीव अभयवन (8 किलोमीटर), ब्रह्म कुमारी आध्यात्मिक विश्वविद्यालय तथा संग्रहालय। माऊन्ट आबू वन्य जीव अभयवन पक्षियों, तेंदुओं, साम्भरों और जंगली सुअरों की प्रजातियों का घर है।

- **खण्डाला:** महाराष्ट्र में पश्चिमी घाटों में अवस्थित एक पर्वतीय स्थल है। यह दक्कन के पठार और कांकण के मैदान को जोड़ने वाली सड़क पर है। लोनावाला सहयाद्री पर्वत शृंखला के ढ़ाल पर स्थित है तथा सुन्दर घाटियों, पहाड़ियों, दूधिया जल प्रपातों, हरी भरी हरियाली और आन्ददायी ठण्डी हवाओं के वरदान के कारण प्रसिद्ध है। कुने जल प्रपात, टाईगर्स लीप, ड्यूक्स नोज, शिवाजी पार्क, राजमाची पार्क, रेवूड, लोहगड़ दर्शन तथा अमृतांजन प्वाइंट यहां के प्रमुख आकर्षण हैं।

तालिका 12.2: भारत में अन्य लोकप्रिय पर्वतीय स्थल

राज्य	कहां	पर्वतीय स्थल
आन्ध्र प्रदेश	अराकू घाटी	हार्सले हिल्स
गुजरात	सतपुड़ा	विल्सन हिल्स
हिमाचल प्रदेश	चैल	धर्मशाला, डलहौजी, कसौली, मनाली, शिमला, कुफरी, पालमपुर
जम्मू-कश्मीर		श्रीनगर, पहलगाम, गुलमर्ग, लेह
कर्नाटक		कुद्रमुख, केमानगुण्डी, मदीकेरी, नन्दी हिल्स, चिकमंगलूर
मध्य प्रदेश		पंचमढ़ी
महाराष्ट्र		लोनावाला, अम्बोली, चिकालदरा, खण्डाला, लावासा, महाबालेश्वर, माथेरन, पंचगनी, टोरानमल
मेघालय		नोकलीकई
ओडिसा		दरिंगबाड़ी
राजस्थान		माऊन्ट आबू
सिक्किम		गंगटोक, पेलिंग, लाचुंग
तमिलनाडु		ऊंटी, कुनूर, कोडईकनाल
उत्तराखंड		नैनीताल, मसूरी, अल्मोड़ा, औली, कौसानी, रानीखेत
पश्चिम बंगाल		कलीमपोंग, कुरसेओंग

चित्र 12.7: एक पर्वतीय स्थल

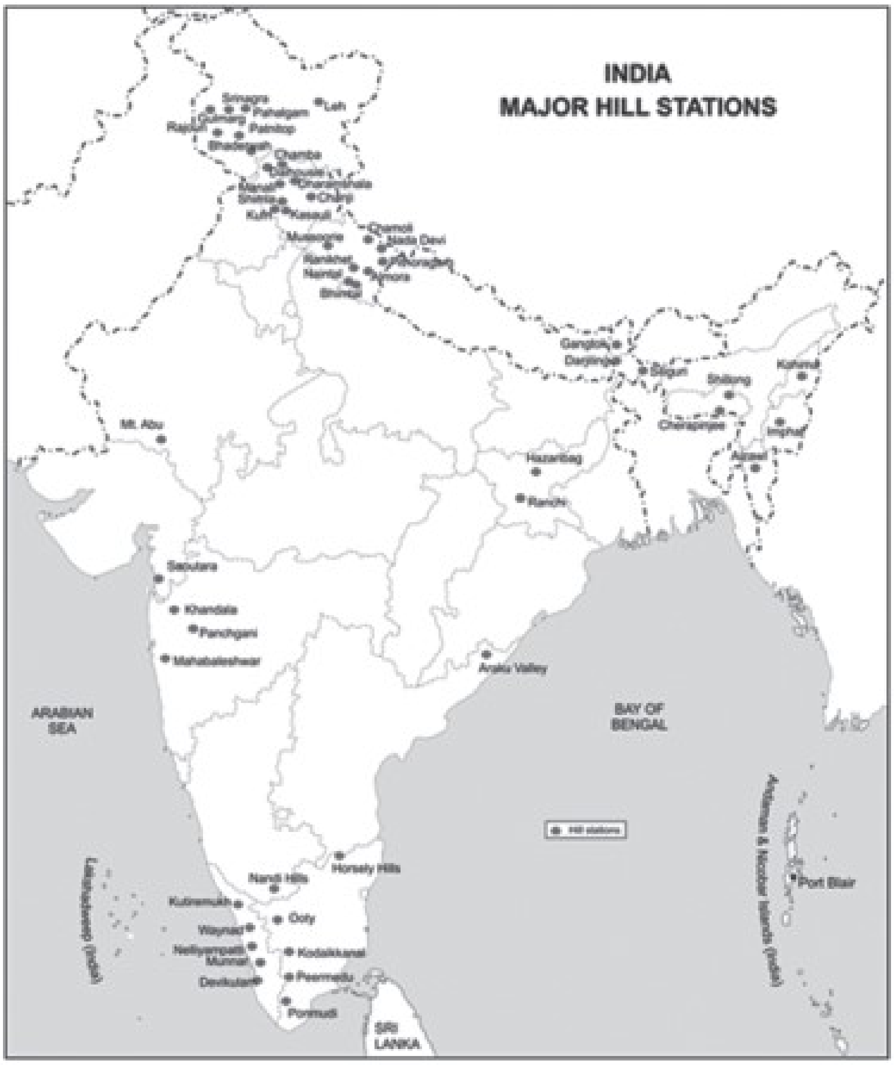

चित्र 12.8: भारत में पर्वतीय स्थल

पाठगत प्रश्न 12.3

1. वन्य जीव अभ्यारण्य तथा पक्षी विहार को परिभाषित कीजिए।
2. पर्यटक वन्य जीव अभ्यारण्य तथा पक्षी विहारों को देखने क्यों जाते हैं?
3. नल सरोवर पक्षी विहार क्यों प्रसिद्ध है?

आपने क्या सीखा

- भारत को चार प्रमुख भागों में बांटा गया है। ये (अ) उत्तरी पर्वत, (ब) उत्तरी मैदान, (स) प्रायद्वीपीय पठार और (द) तटीय मैदान एवं द्वीप समूह है। पर्यटन की दृष्टि से सभी अति महत्वपूर्ण हैं।
- यह हमारे देश की बहु-विविधता को प्रदर्शित करता हैं। विविधता को पर्यटन के लिए मुख्य आकर्षण के रूप में देखा जा सकता है।
- भौतिक स्वरूप, जलवायु, परम्पराओं, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में विविधता उपलब्ध है। वस्तुत: देश की वृहत्तर विविधता पर्यटकों को विभिन्न स्थानों को देखने के अपार अवसर प्रदान करती है।
- कुछ क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए अनुकूल हैं तथा साहसिक पर्यटन के लिए उपयुक्त हैं।
- प्रकृति पर्यटन भी बहुत लोकप्रिय है। एक उदाहरण तो हिमालय ही है। राजस्थान का मरूस्थल भी संस्कृति और परम्पराओं में बहुत समृद्ध है।
- तटीय क्षेत्र, 'बीच' पर्यटन के लिए बहुत समृद्ध हैं। देश और विदेश से पर्यटक इनको देखने आते हैं। इसी प्रकार द्वीप भी बहुत लोकप्रिय हैं।
- हिमालय की पहाड़ियां और ढलान पर्वतीय स्थलों के रूप में बहुत लोकप्रिय हैं। अत: देश की बड़ी विविधता पर्यटन के बड़े अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार सरकार द्वारा सही बढ़ावा देने वाली नीति से देश में पर्यटन को प्रोत्साहन मिल रहा है।

पाठांत प्रश्न

1. भारत के विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों का वर्णन कीजिए।
2. भारत का भौतिक स्वरूप किस प्रकार पर्यटन की गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है?
3. भारत में पर्यटन केन्द्रों का विवरण लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. दक्कन के पठार को तीन भागों में बांटा जाता है। दक्कन ट्रैप, पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट। यह 7 लाख 59 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी औसत ऊंचाई 500 मीटर से 1000 मीटर तक है।

2. पश्चिमी घाट

3. अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह शैल से बने हैं जबकि लक्षद्वीप प्रवालों से निर्मित है। अण्डमान द्वीप समूह बड़े आकार के द्वीपों से बना है और इसमें द्वीपों की संख्या ज्यादा है जबकि लक्षद्वीप द्वीप समूह कम संख्या के छोटे द्वीपों से बना है।

12.2

1. भारत में कई पर्यटक सर्किट हैं। पर्यटक इन मार्गों से स्थानों के दर्शनार्थ जाते हैं। पर्यटन के दृष्टिकोण से इन स्थानों का बहुत महत्व है। उनकी अधिक मांग होने के कारण इन्हें टूर-ऑपरेटर (यात्रा करवाने वाले) संचालित तथा आयोजित करते हैं।

2. उत्तर भारत में कई पर्वतीय स्थल हैं। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण स्थल हैं: शिमला, कुल्लू, मनाली, मसूरी, नैनीताल, दार्जीलिंग, माऊन्ट आबू, धर्मशाला

3. तीन प्रकार: हवाई, जलीय और भूमार्गीय

   (अ) हवाई साहसिक पर्यटन – पैराशूटिंग और पैराग्लाइडिंग

   (ब) जलीय साहसिक पर्यटन – राफ्टिंग और वाटर स्काईंग

   (स) भू-साहसिक पर्यटन – रॉक क्लाइम्बिंग और एंगलिंग

12.3

1. वन्य जीव अभ्यारण्य मानवीय हस्तक्षेप से दूर वन्य जीवों के संरक्षण हेतु एक सुनियोजित क्षेत्र होता है। पक्षी विहार एक विशेष प्रकार के वन्य जीव अभ्यारण्य क्षेत्र होता है जिसमें पक्षियों के विविध प्रजातियों को उनके मूल निवास के रूप में संरक्षण दिया जाता है।

2. पर्यटक पशुओं और पक्षियों के स्वाभाविक व्यवहार को देखने के उत्सुक होते हैं।

3. नल सरोवर पक्षी विहार दलदली पक्षी विहार के रूप में प्रसिद्ध है तथा भारत का व्यस्ततम पर्यटक स्थल है।